IJAER/March-April 2021 /Volume-10/Issue 5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हिन्दी भाषा एवं साहित्य सृजन

दुर्गेश कुमार शर्मा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म०प्र०

डा० शोभा रतूड़ी
शोध निर्देशिका
हिन्दी विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म०प्र०

सारांश

बीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य को सबसे नया और शक्तिशाली रूप उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से ही प्रकट हुआ। उपन्यास और कहानियां इस काल के बहुत ही महत्वपूर्ण साहित्यांग हैं। अनेक शक्तिशाली लेखकों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण साहित्यांग कार्य किया। कहानी, जीवन—चरित्र निबन्ध, सूचनापरक साहित्य, वैज्ञानिक विवेचन सम्बन्धी और पुरातन्वात्मक लेख नाटक, नीति नाट्य व्यगं आदि अनेक साहित्योगों की पमर्ति भी इसी पत्रिकाओं के द्वारा हुई। खड़ी बोली को परिष्कृत रूप भी इसी युग में हुआ।

कुंजी शब्द— हिन्दी भाषा, साहित्य, सृजन

प्रस्तावना

बीसवीं सदी में हिन्दी साहित्य की बहुमुखी प्रगति हुई। इस शताब्दी के प्रारंभ में ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा के उद्योग से प्रयोग के इड़ियन प्रेस से **'सरस्वती'** का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

'सन् 1903 ई० से इस पत्रिका के सम्पादक का कार्यभार आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी (1861—1938) ने ग्रहण किया।'

यद्यपि अब तक हिन्दी साहित्य की मुख्य प्रतिभा कविता के माध्यम से ही प्रकाशित हुई, परन्तु बीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य को सबसे नया और शक्तिशाली रूप उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से ही प्रकट हुआ। उपन्यास और कहानियां इस काल के बहुत ही महत्वपूर्ण साहित्यांग हैं। अनेक शक्तिशाली लेखकों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण साहित्यांग कार्य किया। कहानी, जीवन—चरित्र निबन्ध, सूचनापरक साहित्य, वैज्ञानिक विवेचन सम्बन्धी और पुरातन्वात्मक लेख नाटक, नीति नाट्य, व्यंग्य आदि अनेक साहित्योगों की प्रगति भी इसी पत्रिकाओं के द्वारा हुई। खड़ी बोली को परिष्कृत रूप भी इसी युग में हुआ।

(ख) कथा साहित्य

उपन्यास और कहानी दोनों कथा साहित्य के अर्न्तगत ही आते हैं। इस विषय में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखते है। कि—

'उपन्यास और कहानियाँ हमारे साहित्य में नई चीज हैं। पुराने साहित्य में कथा, आरूययायिका आदि के रूप में इस जाति का साहित्य मिलता हैं। पर उनमें और आधुनिक कथाओं उपन्यास और कहानियों में मौलिक भेद हैं।'

अत: 'उपन्यास गद्य का वह कथा रूप है, जिसमें जीवन का विशद् चित्रण होता है। पात्रों के जीवन की विविध रूपणी झांकी देकर उपन्यासकार एक ओर तो मानव चरित्र को व्यक्त करता है और दूसरी ओर युग की प्रवृत्तियों का चित्रण करते हुए हमें कुछ सोचने पर विवश कर देता है।'

इस प्रकार कथा साहित्य के अर्न्तगत गद्य की उपन्यास एवं कहानी दोनों ही विधाएं आती हैं।

उपन्यास

'उपन्यास आधुनिक युग की देन है। गद्य के नए के साथ—साथ उपन्यास केवल कथा मात्र नहीं हैं, पुरानी कथाओं और रूपकों, दीपकों और श्लेषों की छटा और सरस पदों में गुफित पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है।

अत: आधुनिक वैयक्तिकवादी दृष्टिकोण कथा परिणाम है कि लेखक अपने निश्चित मत प्रकट करते हैं और कथानक को इस प्रकार सजाते हैं कि पाठक अनायास ही उसके उद्देश्य को ग्रहण कर सके और उससे प्रभावित हो सके। लेखकों को इस प्रकार को वैयक्तिक दृष्टिकोण ही नए उपन्यासों की आत्मा हैं।

सन् 1816 ई० से 1936 ई० तक काल भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता हैं। हिन्दी में आधुनिक ढ़ग के उपन्यास का लिखना भारतेन्दु युग से ही आरम्भ हुआ। आपने **'पूर्ण प्रकाश और चन्द्र प्रभा'** नामक सर्वप्रथम सामाजिक उपन्यास लिखे बाबू राधाकृष्ण दास जी के नि:सहाय हिन्दू, वं० बालकृष्ण भट्ट ने **'नूतन ब्रम्हचारी' 'एक अनार सौ अजान' 'रामचन्द्र लीडर'** ने **'नूतन चरित्र'** मेहता लज्जा रामशर्मा ने स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी, धूर्तरसिक काल, गोपाल राम गहमरी ने **'बड़ा भाई और सास पतोहू'** किशोर लाल गोस्वामी ने **'हृदय—हारिणी' 'लवंगलता' 'सुख सर्वरी'** राधा चरण गोस्वामी ने **'विधवा विपत्ति'** आदि उपन्यासों की रचना कर हिन्दी—साहित्य को गौरवान्वित किया।

'यद्यपि इस काल के लेखकों पर बंगला और संस्कृत साहित्य का प्रभाव पड़ा। पं० प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोंस्वामी, गदाधर सिंह राधाकृष्ण दास, कार्टिक प्रसाद खत्री, रामकृष्ण वर्मा आदि ने बंगला के अनेक उपन्यासों का अनुवाद किया।'

'आधुनिक ढ़ंग के नाटकों और उपन्यासों का सूत्र पाक्त हो चुका था, नए ढ़ग से उपन्यास लिखे जा रहे थे। वैयक्तिक दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा हो चुकी थी और देश की भिन्न भिन्न भाषाओं प्रेरणा लेकर नए—नए साहित्यागो की सृष्टि का बीज बोया जा रहा था।'

सन् 1916 से 1936 तक का काल प्रेमचन्द्र द्वारा हिन्दी उपन्यास का चरम उत्कर्ष तक पहुँचाने का काल रहा। इस युग के उपन्यासों में सामाजिक जीवन और मानव चरित्र का विशद चित्रण हुआ है। अत: उपन्यास जानव जीवन का दर्पण बन गया। प्रेमचन्द्र जी ने सेवा—सदन, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, जयशंकर प्रसाद जी ने— कंकाल, तितली, इरावती, आदि सशक्त उपन्यास हिन्दी जगत को प्रदान किए। इसके अतिरिक्त विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, चतुरसेन शास्त्री, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, तथा वृन्दावन लाल वर्मा आदि महान लेखकों ने साहित्य—सृजन किया।

हिन्दी उपन्यास जगत में प्राण फूंक देने वाले महान व्यक्ति व धनी मुन्शी प्रेमचन्द्र का निधन 1936 में हुआ। सन् 1916 से उन्नीस सौ छत्तीस तक का समय उपन्यास को चरम उत्कर्ष मे पहुँचाने का काल था। हिन्दी उपन्यास साहित्य को हम दो भागों मे विभाजित कर सकते हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व और स्वतन्त्रता के पश्चात्।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उपन्यासकारों में जैनेन्द्र ने **'परख' 'सुनीता' 'त्याग पत्र',** इलाचन्द्र जोशी ने— **'जहाज का पक्षी' 'घृणा पथ'**, अज्ञेय ने— शेखर एक जीवनी **'नदी के दीप'** आदि उपन्यासों को लिखकर उपन्यासकार हैं— यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, संगेय राघव, अमृत लाल नागर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव, फणाश्वर नाथ रेणु आदि। इस काल के उपन्यासों में मनोविज्ञान का विशेष समावेश हुआ।

निष्कर्षत: हिन्दी उपन्यासों की परम्परा का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से हुआ। लेकिन आरंभिक उपन्यास कपोल—कल्पित और चमत्कार प्रधान थे। जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द्र ने उपन्यास साहित्य में मानव—जीवन का यथार्थ चित्रण आरम्भ किया। प्रेमचन्द्र तो उपन्यास सम्राट से विभूषित ही हैं। उनके बाद विशम्भर नाथ शर्मा कौशिक, आचार्य चतुरसेन जैनेन्द्र, हीरानंद सचिच्दानंद वात्सायन अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवती चरण वर्मा, यशपाल शर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, धरमवीर भारती, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, शिवानी आदि ने सृजनात्मक शक्ति से हिन्दी उपन्यास को समृद्ध किया।

कहानी

'कहानी एक कलात्मक छोटी रचना है। जो किसी घटना, भाव, संवेदना, आदि की मार्मिक व्यजंना करती हैं। इसका आरम्भ और अन्त बहुत कलात्मक एवं प्रभावपूर्ण होता है। घटनाएं एक—दूसरे से सम्बद्ध होती है और हर घटना लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है। लक्ष्य पर पहुँचकर कहानी अपनी विशिष्ट प्रभाव छोड़ती हुई समाप्त हो जाती है।'

कहानी के विषय में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि—

'जो बात उपन्यास के क्षेत्र में सत्य है, करीब—करीब वही कहानियों के बारे में भी ठीक है। कहानी कहने की प्रथा कोई नयी चीज नही है, पर कहानी नामक नया साहित्यांग आधुनिक युग की देन है। यह भी प्रेस और यातायात के नवीन साधनों की सहायता से विकसित हुआ है और लोकप्रिय बना हैं। शुरू—शुरू में पश्चिमी देशों में भी उपन्यास और कहानी में कोई भेद नहीं किया जाता था। परन्तु जैसे—जैसे सभ्यता की भीड़—भाड बढ़ती गई, वैसे—वैसे अल्प समय साध्य छोटे—छोटे साहित्यांगों का विकास भी होता गया। यह साहित्य का सभ्यता के साथ ताल मिलाकर चलने का प्रयास हैं। काव्य के क्षेत्र में लिरिक्स या गीति काव्य, नाटक के क्षेत्र में एकांकी तथा उपन्यास और कथा के क्षेत्र में कहानी इसी प्रयास के फल है।

अत: हिन्दी कहानी की कहानी भी उतनी ही प्राचीन है, जितनी मनुष्य की कहानी। प्रचीन काल से ही कथा, आख्यायिका, वार्ता, वृतान्त, किस्सा, कहानी आदि रूपों में कहानी की परम्परा चली आई है। आधुनिक युग में गद्य के विकास के साथ ही आधुनिक कहानी का विकास हुआ है। इस विकास का सोपान निम्नवत् है—

प्रथम सोपान स्वतन्त्रता से पूर्व माना जाता है। जिसमें ईशा अल्ला खां की **'रानी केतकी की कहानी'** की विशेष चर्चा की जाती है। यद्यपि विज्ञान इसे हिन्दी का प्रथम कहानी मानते हैं, पर इसे कहानी कला की दृष्टि से आधुनिक कहानी नही कहा जा सकता है। भारतेन्दु युग में भी उत्कृष्ट कहानी सामने नही आई। द्विवेदी युग में किशोरी लाल गोस्वामी की **'इन्दुमती'** बंग महिला राजेन्द्र बाला घोष **'दुलाईवाला'** और रामचन्द्र शुक्ला की **'ग्यारह वर्ष का समय'** कहानियों को हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी का श्रेय दिया जाता है। **'इन्दुमती'** सबसे पुरानी कहानी हैं। इसलिए **'इन्दुमती'** से ही हिन्दी की मौलिक कहानी का जन्म माना जा सकता है। हिन्दी कहानी के इस प्रारम्भिक युग में लिखी गई कहानियों में जासूसी के करिश्मा और असम्भव काल्पनिक घटनाओं का पर्याप्त समावेश था। किशोरी लाल गोस्वामी, रामचन्द्र शुक्ल, बंग महिला राजेन्द्र वाला घोष, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोपाल दास गहमरी, आदि इस सोपान के प्रमुख लेखक हैं। जिन्होंने अपनी लेखनीय के द्वारा हिन्दी कहानी जगत को वैभव प्रदान कर अनुगृहीत किया।

द्वितीय सोपान द्विवेदी जी के उत्तरार्द्ध में प्रसाद और प्रेमचन्द्र के आगमन के साथ हिन्दी कहानी के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित हुआ। प्रसाद ने जहाँ भाव, भाषा, कल्पना, का पूर्ण उत्कर्ष दिखते हुए कौतुहल प्रधान प्रसिद्ध कहानियां—आकाशदीप **'पुरस्कार'**, **'मधुवा, 'ममता'**, आदि लिखकर मानव मन के अन्तर्द्वन्द का चित्रण किया। वही प्रेमचन्द्र ने सरल व्यावहारिक भाषा शैली में यथार्थ—जीवन का मार्मिक चित्रण करने वाली आदर्शोन्मुखी प्रसिद्ध कहानियां **'शतरंज के खिलाड़ी' 'कफन' 'पंच परमेश्वर' 'पूस की रात' 'मंत्र'** लिखी। इसी काल में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की **'उसने कहा था'** भी लिखी गई। जो हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जाती हैं।

इसके अतिरिक्त राधिका रमण सिंह जी०पी० श्रीवास्तव, विश्वम्भर नाथ शर्मा। कौशिक, आचार्य चतुरसेन, सुदर्शन आदि कहानीकार इस युग के उल्लेखनीय कहानीकार हैं।

हिन्दी कहानी का तृतीय सोपान सन् 1935 ई० के आस—पास शुरू होता है। जब हिन्दी कहानी एक नई दिशा की ओर जुड़ी। सामाजिक चेतना और यथार्थ जीवन को व्यक्त करने वाली कहानियों का श्री गणेश हुआ। इस काल में सामाजिक मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक कहानियों का सृजन हुआ। इन कहानियों में विभिन्न प्रकार की शैलियां भी देखने में आयी। जैसे—नाटकीय शैली, पात्र शैली, डायरी शैली, प्रतीक शैली, स्वपन शैली आदि।

इस युग के प्रमुख कहानीकार— जैनेन्द्र कुमार, सियाराम शरण शुक्ल, हीरानंद सच्चिदानंद वात्सायन अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवती चरण वर्मा, यशपाल शर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, संगेय राघव, विष्णु प्रभाकर आदि हैं।

चतुर्थ एवं अन्तिम सोपन स्वतन्त्रता के पश्चात् इहिन्दी कहानी का है। 'नयी कहानी' का आगमन एक युगान्तरकारी घटना है। अत: इस युग की कहानी में भाव बोध, और सौन्दर्य बोध के नये द्वार खुले। वर्तमान युग की कुण्ठा, उलझन, दिशाहीनता, मानसिक भटकाव का सूक्ष्म और सजीव चित्रण नए शैली शिल्प में प्रस्तुत किया। आधुनिक जीवन का भोगा हुआ यथार्थ आधुनिक भाव—बोध के धरातल पर व्यक्त करना ही नयी कहानी का उद्देश्य रहा है। इस सोपान के प्रमुख कहानीकार हैं—फणीश्वरनाथ रेणु, अमरकान्त, धरमवीर भारती, शैलेश नटियानी, शिवानी, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, निर्मल वर्मा और भीष्म साहनी आदि है।

निष्कर्षत: हिन्दी के उपन्यासों और कहानियों में क्रमश: यथार्थवादी दृष्टि की प्रतिष्ठा बढ़ती गई, परन्तु वे न तो पूर्णत: यथार्थवादी हुए न पूर्णत: रोमांसवादी। प्रेमचन्द्र और कौशिक आदि की कहानियों एवं उपन्यासों में घटनाओं को वास्तविकता के निकट रखने का पूरा प्रयत्न हुआ। अन्तत: पुराने कथा साहित्य और वर्तमान साहित्य में मुख्य अन्तर यही है कि नवीन साहित्य पाठकों के चित्त में वास्तविक जीवन का भाव उत्पन्न करती हैं। इसका मुख्य कारण लेखकों का यर्थात् ही हैं। लेकिन यह स्मरणीय है कि लेखक मूलत: यर्थाथवादी न होकर मानवतावादी स्वर के पक्षधर हैं।

अन्तत: स्वतन्त्रता के पश्चात् एवं पूर्व हमारे साहित्यकारों ने अनेक ऐसे उपन्यास एवं कहानियों का सृजन किया। जिनका अनुवाद अहिन्दी प्रदेशों की भाषा में अनुवाद के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं में भी हुआ। इस प्रकार हमारी मातृभाषा हिन्दी अनेक भाषाओं के सम्पर्क में आयी और जन—मानस उसके प्रति आकृष्ट हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2009) आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ और समाधान. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- तिवारी, भोलानाथ. भाषा विज्ञान कोश, वाराणासी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड, पृ. सं. 456 व 457
- महर्षि, ओमप्रकाश (2010) वाल्मीकि रामायण में वर्णित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन. पृ.सं. 103
- विद्या भारती प्रदीपिका (जुलाई—सितम्बर 2015), नई दिल्ली: प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मन्दिर, पृ.सं. 7
- Journal of Educational & Psychological Research, Vol-1, No. 2, July – 2011.
- Journal of Research in Education & Society. Vol-2, No.1, April – 2011